“नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री संवेदना”
“NASIRA SHARMA KE UPANYASON MEIN STREE SAMVEDANA”

पी.एच.डी.हिन्दी शोध-सार

2021-22

शोधार्थी
स्वालियाबेगं आर. कोप्पल
Reg No:KSAWUV/Ph.D./520/2020-21

निर्देशिका
प्रो. श्रीमती राजु एस. बागलकोट
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय
विज़यपुर – 586 108

हिंदी विभाग
कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय
विज़यपुर – 586 108

शोध सार

दुनिया के जितने समाज हैं उन सभी की अपनी एक विशिष्टता होती है। हम यह जानते हैं कि समाज, संप्रदाय या धर्म के आधार पर सम्पूर्ण विश्व में प्रमुखतः हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई ही पाए जाते हैं और यह समाज लगभग हर देशों में कुछ-कुछ अनुपात में हैं साथ ही इस अनुपात को एक सूत्रीय निकाय में बांधने के लिए दुनिया भर की सरकारों ने एक व्यवस्थित शासन निकाय बनाया है। भारत जैसे देश की भी यही स्थिति है। इसलिए यहाँ के संविधान में 'धर्मनिरपेक्ष' जैसे शब्द का प्रयोग किया गया है। 'धर्मनिरपेक्षता' का अर्थ है कि राज्य राजनीति या किसी गैर-धार्मिक मामले से धर्म को दूर रखे तथा सरकार धर्म के आधार पर किसी से भी कोई भेदभाव न करे। अर्थात किसी के धर्म का विरोध करना नहीं है बल्कि सभी को अपने धार्मिक विश्वासों एवं मान्यताओं को पूरी आज़ादी से मानने की छूट देता है। बावजूद इसके कालांतर में देश के अन्दर कई बार हिन्दू-मुस्लिम के नाम पर धार्मिक कट्टरता एवं साम्प्रदायिकता जैसी घटनाएँ घटित होती रहीं हैं।

भारतीय समाज विभिन्न संस्कृतियों, परम्परों एवं रीति-रिवाजों का देश है। विभिन्न रूपता के बावजूद एकरूपता या अखंडता में एकता इसकी सबसे बड़ी विशेषता रही है। भारतीय परिवेश में मुस्लिम समाज का प्रवेश लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। और यह प्रवेश दो जातियों, सम्प्रदायों, तहजीबों, मजहबों, सभ्यताओं, एवं संस्कृतियों के मिलन एवं मिश्रण का दौर है। जिसके कारण अवधारणात्मक स्तर पर यह देश कभी भारतीय कभी हिंद तो कभी हिंदुस्तान मुल्क के नाम से भी जाना गयाहै। दुनिया के किसी भी देश में इस तरह का मिलन हमें नहीं दिखाई देता। न केवल संस्कृतियों, परम्परों एवं रीति-रिवाजों के आधार पर बल्कि भाषा, साहित्य, कला आदि के स्तर परभी यह मेल अनोखा था। लेकिन भारत को आजादी मिलने तक एवं बाद के दौर तक आते-आते इस अनोखे मिलन की पूरी की पूरी तस्वीर ही बदल दी गयी। यह तस्वीर केवल बदली ही नहीं गई बल्कि इसे कुरूप भी बनाया गया। जिस भारत की मिट्टी में नया हिंदुस्तान जन्म ले चूका था उसकी जड़े विदेशी बतलायी गई और ऐसा कहा जाता है कि यह सारा खेल मात्र भारत में अंग्रेजों के आने से ही जबकि इसमें कुछ हमारी भी कमियाँ थीं। पद पैसा, प्रतिष्ठा पाने की लालच में कुछ तथाकथित रसूख, अमीर एवं स्वार्थी नेताओं एवं समाजसेवियों ने अपनी जातीय अस्मिता को श्रेष्ठ दिखाने के चक्कर में अंग्रेजों के पिछलग्गू एवं ख़ुशामद करने लगे, लिहाजा उनके हौसले बुलंद होते गए। परिणामतः दोनों संस्कृतियों में आपसी-फूट पड़नी शुरू हो गई। जबकि इतिहास में हम सारा दोष अंग्रेजों के सिर मढ़ कर छुट्टी ले लेना चाहते हैं। आजादी मिलने एवं आजादी के बाद के दौर तक इस देश ने अनेक सांप्रदायिक दंगे, देश का बंटवारा, भारत-पाक युद्ध आदि देखे। जिसकी शिनाख्त तत्कालीन पत्रकारिता ही नहीं बल्कि गहरे स्तर पर रचे जाने वाले भारतीय साहित्य में भी दिखाई देती है। कथा साहित्य के स्तर पर न केवल हिंदी में बल्कि भारत की अन्य भाषाओँ में भी बहुत कुछ लिखा गया। सांप्रदायिक दंगे, बंटवारे के दर्द, मुस्लिम समाज की संवेदना,

पीड़ा एवं उनके संघर्ष को लेकर हिंदी व हिंदीतर में अनेक उपन्यास एवं कहानियाँ लिखी गयी। नई कहानी आन्दोलन के साथ नवउदारीकरण औरअस्मितामूलक विमर्शों की वैचारिकी ने उपेक्षित एवं मुख्य धारा से वंचित, हाशिये पर ढकेल कर गई अस्मिताओं को वैचारिक बल प्रदान किया गया। जिससे साहित्य एवं मानविकी के क्षेत्र में एक युगांतकारी परिवर्तन लाने का प्रयास किया गया। आज जिस प्रकार भारतीय मीडिया एवं पत्रकारिता की भाषा ने एक खास चश्में से दंगाई, अल्पसंख्यक, उपद्रवी, आतंकी, कौमी आदि शब्दावलियों से सम्पूर्ण मुस्लिम समाज को दिखलाने का प्रयास किया है। वह खतरनाक है। आने वाले वक्त में यह स्थिति और भी भयंकर हो सकती है। इसलिए इस समस्या को केवल ऐतिहासिक या कम्यूनल अथवा रेशनल स्तर पर नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि इसे सम्पूर्ण मानवीयता एवं सर्व धर्म संभाव्य के धरातल पर देखा जाना चाहिए।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में भारतीय साहित्य के अंतर्गत प्रमुख रूप से हिंदी एवं कन्नड़ के कुछ चुनिन्दा उपन्यासों में मुस्लिम समाज की इन्ही स्थितियों, संवेदनाओं एवं संघर्षो को तुलनात्मक शोध प्रविधि के आधार पर समझने का प्रयास किया गया है।

प्रथम अध्याय : समाज साहित्य का दर्पण होता है। इसलिए मानव के व्यक्तित्व का चित्रण साहित्य में होता है,अर्थात साहित्य और जीवन में प्रत्येक इन्द्रिय अनुभव को संवेदना माना जाता है। मनोविज्ञान का अध्ययन करनेवाले विद्वान उसे अब भी संवेदना है। संवेदना को विशिष्ट अंत अवयव स्नायाविक संवेदना के रूप में मानते हैं। संवेदना शब्द का मूल अर्थ है, स्थायी भावों का अनुभव करना तथा उन्हें प्रकट करना । संवेदना का ज्ञान मनोवैज्ञानिक है । जब हम किसी घटना या प्रसंग को देखकर उसका प्रतिबिंब मन में जो अनभूति होता है, उसे संवेदना कहते है । संवेद या संवेदना शब्द एक और अर्थ में वेद शब्द है । जिससे वेद से वेदन से संवेदन शब्द बनकर उसके पर्यायी शब्द संसेशन या फीलिंग होता हैं। हिंदी भाषा में उसके पर्यायी शब्द इन्द्रियानुभव, भावानुभव, सहानुभूति , अनूभव प्रेरित की प्रक्रिया होता है शारिरिक संवेदना मानव की शारिरिक अवश्यकताएं आन्तरिक दशाओं में शारिरिक संवेदना के अंतर्गत आती है।जैसे भूख, प्यास, उत्साह थकान आदि दूसरी संवेदना मानसिक है। मानसिक संवेदना जिसमें सूख और दुख के आधिकतर दुःखित अवस्था में ही अनुभूत होती हैं। मन से जुडी कोई भी घटना के बाबत प्रेरित या संकल्पित बदलाव से कम अधिक मात्रा संवेदना का रूप स्पष्ट होता है।

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में ऐसे अनेक पात्र हैं। जिनके कथोपकथन एवं संवाद से शारिरिक, मानसिक संवेदना व्यक्त होती है, जिसे विस्तृत रूप से प्रबंध में लिखा गया है। मनुष्य का

जीवन का व्यापक अनुभव तथा तथ्यपूर्ण घटनाओं की प्रतिक्रिया ही संवेदना है। संवेदना उसे कहते है, जिसके ज्ञान से व्यक्ति को दो खाने परखाने , सुंधने तथा एहसास करना आसान होता है।

नासिरा शर्मा की उपन्यासों के पात्र संवेदना ज्ञान सम्पन्न और कुछ पात्र उसके अभाव में क्या क्या वर्तन बर्ताव करते हैं। उनके जीवन के तत्व क्या है जीवन दर्शन कैसे है उसका अध्ययन किया गया है। विभिन्न कोशगत संवेदना के अर्थों से ज्ञात होता है। वह योग्यता शक्ति है, जिसके आधार पर व्यक्ति को समझाने देखने सुनने ,सूंघने तथा महसूस करने का ज्ञान होता है। अर्थात जीवन का व्यापक अनुभव ही संवेदना है।

दूसरा अध्याय : नासिरा शर्मा के उपन्यासों में अभिव्यक्त सामाजिक, आर्थिक धार्मिक एवं साकृतिक राजनितिक संवेदना

आधुनिक हिन्दी उपन्यास- साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर एवं वरिष्ट साहित्यकार नासिरा शर्मा व्दारा विरचित उपन्यासों को अध्ययन का विषय बनाया है। नासिरा शर्मा उन विरले रचनाकारों में एक है। जिनकी हर कृति का कैनवास बहुत विराट हैं। इनके उपन्यासों में गहरे शोध की छाया है । साहित्य अकादमी व्दारा सम्मानित एवं किस्सागोई क फन माहिर नासिरा जी के उपन्यासों में नए - पुराने रिश्तों की दास्तान है, लुप्त होती संवेदनाओं की पड़ताल है ,वैश्विक परिदृश्य में समाज में समाज की बंदिशों में जकडी हुई इंसानियत की चीख है तथा सामाजिक एवं सास्कृतिक तंतुओं के ताने - बाने को गहराई समझने का सफल प्रयास है। नासिरा जी की सृजन-यात्रा की विविध धाराओं का परिचयात्मक विवेचन किया गया है। साथ ही अनुसंधेय औपन्यासिक रचनाओं का वस्तुविश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए उनमें नामकरण एवं शीर्षक के अनुरूप अन्तनिर्हित जीवन - दर्शन को निस्यूत रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध में इन सभी उपन्यासों के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सास्कृतिक, राजनितिक पक्षों पर चिंतन-मनन करने का प्रयास किया गया है।

तीसरा अध्याय : नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री पात्रों की वैचारिकता

नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यासों में स्त्री पात्रों के माध्यम से बहुत कुछ कहा है। स्त्रियों की पीडा, कुंटा और तिरस्कार, को स्त्री पात्र है के माध्यम से उजागर किया गया है।हमारे देश में स्त्री अबला है, कह देने से बात स्पष्ट नहीं हो जाती है लेखक अपने स्पष्टवादी दृष्टि से जांच-परखकर स्त्री की दशा और मानसिकता का वर्णन नहीं करते, तो नारी की सही व्याख्या नहीं हो पाती है। यह नारी की नारीत्व सुलभ गुण से स्पष्ट हो पाता है। नारी घर संभालने वाली है या नारी पुरुषों के कन्धे से कन्धे मिलाकर चलने वाली हैं। नारी सड़को पर काम करनेवाली है, नारी

सरकारी कार्यालय में काम करने वाली है या ईट भट्टो पर काम करने वाली है। ऐसा कोई कार्य नहीं हैं, जो नारी ना करती हो । नारी का अनेकरूपता की सूची बहुत बड़ी है। स्त्री के कई रूपों को लेकर जिसमें उसके पीड़ा, संत्रास और कुंटा को खत्म कर उसके जीवन में स्वतंत्रता उत्साह और उमंग को भरने की कोशिश भी नासिरा जी करती है। नासिरा जी की आधिकांश भाग शहरों में बीता है,पर वह गाँव की मिट्टी को बखुबी पहचानती है। ग्रामीण स्त्री के स्वभाव और गुण को अच्छी तरह पहचानती हैं। स्त्री के अन्दर की कुंठा और अकेलापन को भी बड़े ही मनोवैज्ञानिक तरिके से उजागर करती है सही बात यह है की अपनी सारी रचनाओं में वे इंसान का तकलीफों को व्यक्त करती है। ठीकरे का मंगनी में नासिरा शर्मा ने आजादी के बाद की संघर्षशील लडकी जो अपनी मेहनत और योग्यता से साबित करती है, कि पितृसत्ता में स्त्री की एक अपनी पहचान भी होती है। " शाल्मली " उपन्यास नासिरा शर्मा की प्रसिद्ध उपन्यास है। शादी के बाद शाल्मली के जीवन में एक ही ध्वनि गुँजती है कि नरेश पति हैं और वह पत्नि स्वामी और दासी का संबंध शाल्मली और नरेश क बीच एक मजबूत दीवार का रूप धारण करने लगी थी। शाल्मली समय से पहले जीवन संघर्ष में कूद पडी थी ।

चौथा अध्याय : नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री संवेदना

नासिरा शर्मा के उपन्यास में समाज के विविध पक्षों को लेकर और स्त्री संवेदना को लेकर चिंतायें व्यक्त की गई है। सात नदियाँ एक समन्दर – ईरानी क्रान्ति पर लिखा गया दुनिया का पहला उपन्यास है, जो अब 'बाहिश्ते–जहरा' के नाम से भी प्रकाशित हुआ है। 'शाल्मली' स्वतंत्रता के बाद अस्तित्व में आया उस महिला का कहानी है जो वैचारिक रूप से परिपक्क है और वैवाहिक जीवन में प्रेम और बराबरी पर विश्वास रखती है। इसी तरह 'ठीकरे की मंगनी' में आजादी के बाद का संघर्षशील लड़की जो अपनी मेहनत और काबिलियत से साबित करती है कि पितृसत्ता में औरत की एक अपनी पहचान भी होती है। 'जिंदा मुहावरे' में हिन्दुस्तान के बँटवारे से उपजे दर्द का, 'अक्षयवट' में कुव्यवस्था व कदाचार के विरुद्ध संघर्षरत युवा पीढी का मनोव्यथा का, कुइयॉजान में दिनों–दिन विकराल होती जल व्यवस्था व शुष्क होती संवेदनाओं का 'जीरो रोड' में अपने देश में हालात से उखडे हुए लोगों के यथार्थपरक जीवन का, 'पारिजात' में संस्कृति और परम्परा की बाडेबंदियों के आर पार जाकर संबंधों के नए सूत्र खोजन की कोशिश का 'अजनबी जजीरा' में इराक का बदहाली व उससे उत्पन्न दारुण स्थितियों का, 'कागज की नाव' में स्थानीय बेरोजगारा, पलायन और जरूरतों व जिम्मेदारियों के समन्दर को चंद रुपयों के सहार पार करने की कोशिश का, 'शब्द पखेरू' में बाजार और तकनीक के भँवरजाल में चकराई सी यूवा

पीढी का तथा 'दूसरी जन्नत' में आधुनिकता की तेज रफ्तार पटरी पर फिसाती जिन्दगी तथा मुस्लिम समाज में आ रहे बदलावों का जीवन्त चित्रण है।

पाँचवाँ अध्याय : नासिरा शर्मा के उपन्यासों की भाषा शैली

भाषा न केवल आत्माभिव्यक्ति का माध्यम होती है अपितु वह विचारों का सम्प्रेषण का सामूहिक चेतना के अभिव्यक्ति पक्ष का साकार स्वरूप भी होती हैं। प्रत्येक साहित्यकार को अपना अलग भाषा, शैली छवि एवं शिल्पगत पहचान होती है। उसी के अनरूप एक साहित्यकार का अनुभवगत विस्तार लेखकीय गाम्भीर्य अनूठा शाली-शिल्प एवं लोक संपृक्ति पाठकीय संवेदना को जागृत एवं झंकृत करने में समर्थ होते है और इस सामर्थ्य का आधार है लेखक का स्वाभाविक प्रतिभा 'शक्ति; शास्त्र-पर्यायालोचन से उत्पन्न 'निपुणता' और साहित्य और के मर्म्ज्ञों की शिक्षा के अनुसार कृत 'अभ्यास'। उंन्होंने कथ्य के अनसार ही भाषा शैली का प्रयोग किया है। उनके उपन्यासों में सर्वत्र परिलक्षित सहजता व तरलता उनके शैल्पिक वैशिष्ट्य को प्रामाणीत करती है। उन्होंने पात्र, परिवेश, भाव, कथ्य, स्थिति विशेष को देखकर ही तदनुकूल भाषा शैली अपनायी है। साथ ही उनका लेखन अनुभवजन्य ययार्यभूमी पर आधारित है। उनकी लेखनी जमीन-जमीन का फ़र्क भली - भाति पहचानती है। इसालिए कथ्य के परिवश में आम बोलचाल में प्रयुक्त होनवाले मुहावरों, लोकोक्तियों, कहावतों व सूक्तियों का उन्होंने भरपूर प्रयोग किया है।

शोध की प्रमाणिकता- नासिरा शर्मा के उपन्यासों में मुस्लिम समाज को लेकर हिंदी साहित्य में अलग-अलग स्तर पर भारत के अनेक विश्वविद्यालय में कार्य हुए हैं। लेकिन "नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री संवेदना" लेकर अभी तक कार्य नहीं हुआ है। यह विषय अपने आप में नवीन है। अतः प्रस्तुत शोध शीर्षक से संबंधित अभी तक मेरी जानकारी में भारत के किसी शिक्षण संस्थान या विश्वविद्यालय में कोई काम नहीं हुआ है।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोध प्रबंध कॉ - "नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री संवेदना" में शोध की मनोवैज्ञानिक पद्धति और विश्लेषणात्मक पद्धति का सहारा लेते हुए "नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री संवेदना" साहित्य में रचित उपन्यासों में आलोचनात्मक विश्लेषण करने का प्रयास किया है। मुस्लिम, समाज और संस्कृति के लिए मूल आधार रही है। इनके समक्ष अनेक सामाजिक, सास्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक और संवैधानिक समस्याएँ मौजूद है।

शोध प्रबंध का उद्देश्य :प्रस्तुत शोध-प्रबंध का प्रमुख उद्देश्य नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री संवेदना के उपन्यासों में चित्रित मुस्लिम समाज में हुए बदलाओं पर अध्ययन करना है। इस शोध-प्रबंध में नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री संवेदना साहित्य में मुस्लिम समाज में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक और संविधानात्मक पहलुओं को इनके उपन्यासों के माध्यम से विश्लेषित करने का प्रयास किया जाएगा। उस समाज में हुए परिवर्तन को देखने का प्रयास किया जाएगा। उनके खेत - खलियान, रहने के लिए घर, रोजगार, स्त्रियों के लिए संरक्षण, जात पंचायत के वर्चस्व को देखने का प्रयास किया जाएगा। इनके बच्चों की शिक्षा और पहचान की समस्या आदि को रेखांकित किया जाएगा। आधुनिकीकरण एवं भूमंडलीकरण के कारण इनके जीवन में आए विविध परिवर्तनों और भाषाओं आदि को प्रस्तुत शोध-प्रबंध के माध्यम से किया जाएगा। अंत में मुस्लिम समाज को आधुनिक और उत्तर आधुनिक विचारों को देखते हुए सुधार के लिए समुचित-उपाय भी सुझाए जाएंगे।

शोध कार्य की उपलब्धियाँ :

1. नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री संवेदना में उपन्यासों के माध्यम से मुस्लिम समाज के रीति रिवाजो को संक्षेप में प्रस्तुत शोध प्रबंध के माध्यम से देखा गया।
2. नासिरा शर्मा के उपन्यासों में अभिव्यक्त सामाजिक, सास्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक और संवैधानिक संवेदना।
3. प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक मुस्लिम समाज में हुए बदलाओं को देखा गया है।
4. मुस्लिम समाज भितरी और बाहरी अन्याय, अत्याचारों आदि के संबंध में शोषण के बदलाओं को देखा गया है।
5. मुस्लिम समाज के स्त्रियों की पारिवारिक, शोषित, परित्यक्ता, विधवा, आदि स्थितियों के बारे में उपन्यासों के माध्यम से देखा गया है।

संभावनाएँ :

1. नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री उपन्यासों में मुस्लिम समाज पर आधारित उपन्यासों का अध्ययन।
2. नासिरा शर्मा के काथा साहित्य में उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन।
3. नासिरा शर्मा के उपन्यासों में भारतीय परिपेक्ष्य में मुस्लिम समाज के स्त्री का जीवन और साहित्य पर अध्ययन।

अनुक्रमणिका

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री संवेदना

"NASIRA SHARMA KE UPANYASON MEIN STREE SAMVEDANA"

I. पहला अध्याय: संवेदना का अभिप्रेत

1. संवेदना का अर्थ

2. संवेदना का परिभाषा

3. पर्यायवाची शब्द

4. संवेदना के प्रकार

5. संवेदना का स्वरुप

6. संवेदना के विविध आयाम

    6.1 सामाजिक संवेदना
    6.2 राजनितिका संवेदना
    6.3 सास्कृतिक संवेदना
    6.4 वैयक्तिक संवेदना
    6.5 धार्मिक संवेदना

7. संवेदना और साहित्य
8. उप्न्यास साहित्य में स्त्री संवेदना निष्कर्ष

II. दूसरा अध्याय : नासिरा शर्मा के उपन्यासों में अभिव्यक्त सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक, राजनितिक संवेदना

1. सामाजिक संवेदना
    1.1 स्त्री की सामाजिक परिस्थिति
    1.2 स्त्री शोषण
2. सांस्कृतिक संवेदना
    2.1 मोहरम
    2.2 रंजान
    2.3 फातेहा
    2.4 शादी के रसमे
    2.5 नाम रखने की रसमे
3. धार्मिक संवेदना
    3.1 जाति व्यवस्था
    3.2 हिंदू-मुस्लिम एकता
    3.3 तलाक
    3.4 धार्मिक नियमो का विरोध
    3.5 स्त्रीयों का दुरदशा

4. आर्थिक संवेदना

4.1 नगरीकरण

4.2 आर्थिक विषमता

4.3 बेरोजगारी

5. शैक्षणिक संवेदना

5.1 शिक्षा

5.2 शिक्षा एवं सरकारि नौकरी

5.3 शिक्षा का महत्व

6. राजनितिक संवेदना

6.1 भ्रष्टाचार व्यवस्था

6.2 बटवारे में राजनिति

6.3 पार्टियों या पक्षओं राजनिति

III. तीसरा अध्याय : नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री पात्रों की वैचारिकता

1. ठीकरे की मंगनी - महरुख

2. शाल्मली - शाल्मली

3. कागज़ का नाव - महाजबी

4. पारिजात - रुही

IV चौथा अध्याय:नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री संवेदना

1. ठीकरे की मंगनी

2. शाल्मली

3. कागज़ की नाव

4. पारिजात

5. जिरोराइ

6. कइयांजान

7. अक्षयवट

8. जिन्दा मुहावरे

9. अज़नबी जजीरा

10. सात नदियाँ एक समन्दर

11. अल्फा बीटा गामा

V पाँचवा अध्याय: नासिरा शर्मा के उपन्यासों की भाषा शैली

1. नासिरा शर्मा के उपन्यासों की भाषा

1.1 - अंग्रेजी शब्द

1.2 - देशी शब्द

1.3- उर्दु शब्द

1. 4 - मुहावरे

1. 5- कहावत

1. 6 – लोकोक्तियाँ

2. नासिरा शर्मा के उपन्यासों में विविध शैलियाँ

2.1 - वर्णनात्मक शैली

2.2 - आत्मकथात्मक शैली

2.3- विश्लेषणात्मक शैली
2.4 - आंचालिक शैली

उपसंहार
संदर्भ ग्रंथ सूची
परिशिस्ट एक : आधार ग्रंथ
परिशिस्ट दो : सहायक ग्रंथ
शोधार्थी के एकाडेमीक कार्य

यह रूपरेखा अंतिम नहीं है, विषय के अनुसार बदल सकता है। इन सभी अध्यायों को शोध कार्य में विस्तार रूप से विश्लेषण करुंगी। शोध कार्य के गहन अध्ययन केलिये नासिरा शर्मा के उपन्यासों का सामग्री संग्रह कर रही हूँ ।